Dr. Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

"Dualism"
(द्वैतवाद)

द्वैतवाद वह तत्व शास्त्रीय सिद्धान्त है जो मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत को स्वीकार करता है। इसके अनुसार मूलतत्व को किसी एक प्रकार का मानना अनुचित है क्योंकि उसकी प्रकृति में मौलिक द्वैत है। यह मूलतत्व की गुणात्मक एकता को अस्वीकार करता है और द्वैत को सत्य मानता है।

भौतिकवाद, प्रत्ययवाद और अनुभववाद इन तीनों तत्व शास्त्रीय सिद्धान्त के साथ द्वैतवाद का विरोध है क्योंकि ये तीनों सिद्धान्त मूल तत्व के स्वरूप को एक मानते हैं। भौतिकवाद के लिए मूलतत्व सिर्फ भौतिक, प्रत्ययवाद के लिए सिर्फ आध्यात्मिक, अनुभववाद के लिए सिर्फ अनुभव है। पर द्वैतवाद मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत मानता है। इसके अनुसार मूलतत्व की प्रकृति में दो भिन्न धर्म या भिन्न प्रकार के तत्व हैं जो ऐसे हैं कि एक का दूसरे में अन्तर्भाव असम्भव है। अतः द्वैत शाश्वत है। विश्व के पदार्थों में जितनी भिन्नताएँ या विरोध हैं वे इसी आधारिक द्वैत के कारण हैं। द्वैत का आधार होता है कोरा अनुभव।

व्यापक दृष्टि से द्वैतवाद के दो भेद किये गये हैं
1. अदार्शनिक द्वैतवाद 2. दार्शनिक द्वैतवाद

Kinds of Dualism

1. Unphilosophical dualism or Popular dualism or Naive dualism or Common-sense dualism

2. Philosophical dualism

1. अदार्शनिक द्वैतवाद

वह सिद्धान्त है जिसे साधारण जनता बिना बौद्धिक छान-बीन किये ही स्वीकार कर लेती है। इसका मंडन तर्क और बौद्धिक चिन्तन का परिणाम नहीं होता। दैनिक जीवन के अनुभव पर साधारण व्यक्ति सुख-दुःख, निर्जीव-सजीव, जीवन-मृत्यु दोनों को real मान लेता है।

2. दार्शनिक द्वैतवाद-

तर्क और युक्ति के आधार पर स्थापित द्वैतवाद है। यह सिद्धान्त विश्व के मूल में द्वैत को मानता है किन्तु अपने निष्कर्ष की स्थापना के लिए वह बौद्धिक चिन्तन का सहारा लेता है। मूलसत्ता का वास्तविक स्वरूप क्या है, उसके अन्दर स्थित द्वैत किस प्रकार का है तथा विश्व की सृष्टि क्यों और कैसे होती है, इन सभी प्रश्नों का

इस मानने का प्रयास दार्शनिक द्वैतवाद करता है। अदार्शनिक द्वैतवाद और दार्शनिक द्वैतवाद में अन्तर सीर्फ Method को लेकर है। एक दार्शनिक जीवन का अनुभव है और दूसरा बौद्धिक विश्लेषण का अनुभव है।

दार्शनिक द्वैतवाद को लेकर एक प्रश्न उठता है कि अगर मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत है तो उनकी संख्या क्या है? इस प्रश्न का उत्तर तीन रूप में दिया गया है। कुछ दार्शनिकों ने कहा है कि—

1. मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत है और उनकी संख्या में भी द्वैत है। (Duality both in nature and number)

3. मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत और उनकी संख्या में अनेकता है। (Duality in nature but plurality in number)

दार्शनिक द्वैतवाद के मुख्य रूप से यही तीनों प्रभेद है।

2. Duality in nature but unity in number—

पाश्चात्य दर्शन में इसका स्पष्ट उदाहरण नहीं मिलता है। भारतीय दार्शनिक रमानुज के दर्शन में इसका बड़ा ही स्पष्ट उदाहरण

देखने को मिलता है। इनके अनुसार विश्व का मूलाधार ईश्वर या ब्रह्म है जिसकी संख्या एक है किन्तु प्रकृति द्वैत है। रामानुज सगुण में विश्वास करते हैं निरगुण को वे नहीं मानते हैं। उन्होंने ब्रह्म के रूप में दो तत्वों को स्वीकार किया है -
(1) चित् (2) अचित्।
1. चेतन पदार्थों का निर्माण चित् से होता है।
2. अचित पदार्थों से अचेतन का निर्माण होता है। चित और अचित दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। रामानुज के अनुसार ब्रह्म सजातीय और विजातीय भेद से रहित है लेकिन यह स्वगत भेद से रहित नहीं है। अतः रामानुज संख्यात्मक एकवाद तथा गुणात्मक द्वैतवाद का प्रतिपादन करते हैं। इनका दर्शन विशिष्ट द्वैत कहलाता है, क्योंकि वे ब्रह्म को चित और अचित से युक्त मानते हैं।
2. Duality both in nature and number - भारतीय दर्शन में इसका स्पष्ट उदाहरण नहीं मिलता है। पाश्चात्य दर्शन में इसका स्पष्ट उदाहरण

प्लेटो और अरस्तू के दर्शन में मिलता है। प्लेटो दो परमार्थ तत्व को मानता है — 1. Idea of good.
2. Matter. इनका कहना है कि सामान्य प्रत्ययों की संख्या अनन्त है और सत्य है किन्तु सबको स्वतंत्र सत्ता प्राप्त नहीं है। पूर्णतः स्वतन्त्र सत्ता सिर्फ शुभ प्रत्यय की है जो सर्वोत्कृष्ट सर्वव्यापक तथा अन्य प्रत्ययों का आधार है।

"The supreme Idea, he tells us, is the God. This, as being the ultimate reality, is the ground of all other Ideas." शुभ प्रत्यय के अतिरिक्त एक और पदार्थ परमार्थ है और वह है भूत। भूत निर्गुण एवं formless है। इसी भूत पर विभिन्न प्रत्ययों की छाप पड़ने से विश्व के विभिन्न पदार्थों की उत्पत्ति होती है। Aristotle किसी भी कार्य की उत्पत्ति के लिए चार कारण को मानते है —
1. उपादान कारण (Material Cause)
2. निमित्त कारण (Efficient Cause)
3. स्वरूप कारण (Formal Cause)
4. प्रयोजन कारण (Final Cause)

बाद में Aristotle तीनों कारणों को final cause में रूपान्तर कर देते हैं।

1. Form 2. Matter

3. Duality in nature but plurality in number - इसके स्पष्ट समर्थक प्राचीन यूनानी दार्शनिक Anaxagoras तथा भारतीय दर्शन में कपिल हैं। कपिल द्वारा स्थापित दार्शनिक सम्प्रदाय सांख्य दर्शन कहलाता है। द्वैतवाद का यह भेद मूल सत्ता में गुणात्मक द्वैत और संख्यात्मक अनेकता स्वीकार करता है।

एनेक्सागोरस मानते हैं कि जड़ और चितशक्ति परस्पर विभिन्न प्रकृति वाले पदार्थ मूलतत्व हैं। इनमें जड़ की संख्या अनेक है तथा चितशक्ति एक। एक चितशक्ति और अनेक जड़ मिलकर मूल तत्व की

23 SUNDAY

संख्या अनेक हो जाती है। किन्तु इनकी प्रकृति द्वैतपूर्ण है क्योंकि चितशक्ति चेतन है और जड़तत्व भौतिक है। सृष्टि के प्रारम्भ में जितने भी भौतिक पदार्थ हैं वे सभी एक साथ मिले रहते हैं।

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन में मूलतत्व के स्वरूप को द्वैत और संख्या

को अनेक माना है। साहीती कपिल आदि प्रवक्ता है जो मूलतत्व के रूप में पुरुष और प्रकृति को स्वीकार करते हैं। इन दोनों के मिलाप से ही सृष्टि का निर्माण होता है। अन्ततः सभी द्वैतवादियों ने स्वीकार है कि जड़ और चेतन के बीच द्वैत है। चूंकि द्वैतवादी जड़ और चेतन दो परस्पर विरोधी पदार्थ को परमार्थ मानते हैं। अतः इसे सिद्ध करने के लिए अनेक तर्कों का सहारा लिया है।

1. द्वैतवाद का सबसे सबल प्रमाण अनुभव है। जड़ और चेतन दो तरह के परस्पर विरोधी पदार्थों का अनुभव हमें सदा होता है। इसलिए विश्व के मूल में जड़ और चेतन का आधारिक द्वैत स्वीकार किया जा सकता है अन्यथा अनुभूत द्वैत की व्याख्या नहीं हो सकती है।

2. द्वैतवाद जड़ और चेतन को परस्पर विरोधी मानता है इसलिए दोनों को परमार्थ मानना आवश्यक है क्योंकि विरोधी होने के कारण किसी एक को ही परमार्थ मानकर दूसरे की व्याख्या नहीं हो सकती। दोनों को परमार्थ मानकर ही विश्व की संगत व्याख्या हम कर सकते हैं।

3. सांख्य दर्शन के

के अनुसार चेतन और अचेतन पदार्थों की अनुभूति सर्व प्रमाणित है। अपने अन्दर आत्मा के रूप में चेतन सत्ता का अनुभव सबको होता है। अतः चेतन तत्व या परमात्मा का अस्तित्व है। किन्तु सभी अनुभूत भौतिक पदार्थ सीमित तथा किसी-न-किसी पदार्थ के कार्य या परिणाम है। इसलिए इनका कोई अनादि और अनन्त कारण मानना आवश्यक है। यही प्रकृति है। इसलिए अन्त में पुरुष और प्रकृति अर्थात् चेतन और जड़ परमार्थ सिद्ध होते हैं।

4. कुछ विचारकों का कहना है कि जितने भी प्राकृतिक विज्ञान हैं जैसे Physics, Chemistry, Physiology, Psychology आदि सभी जड़ एवं चेतन के बीच द्वैत को स्वीकार करके इसी आधार पर प्रयोग करते हैं और इन विज्ञानों के प्रयोग सत्य होते हैं इसलिए जड़ एवं चेतन को परमार्थ मानना ही होगा।

द्वैतवाद के विरुद्ध अनेक आलोचनाएँ भी की गयी है—

1. द्वैतवाद अपने विचार को अनुभव पर आधारित

करता है लेकिन अनुभवात्मक ज्ञान हमेशा सत्य नहीं होता है। हमें अनुभव कुछ होता है और वास्तविकता कुछ और होती है। जैसे - हमें अनुभव होता है कि सूर्य गतिशील है और पृथ्वी स्थिर है पर यह अनुभव गलत है क्योंकि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी गतिशील है। इसलिए अनुभूत द्वैत के आधार पर वास्तविक द्वैत का अनुमान करना ठीक नहीं है।

2. द्वैतवाद का कहना है कि परस्पर विरोधी तत्वों के सहयोग से विश्व का निर्माण होता है। किन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि मूल तत्व परस्पर विरोधी हैं तो इनमें सहयोग कैसे सम्भव होगा? ऐसी हालत में विश्व की उत्पत्ति कैसे होगी? इसका उत्तर किसी भी द्वैतवादियों के पास नहीं है।

3. सांख्य का कहना है कि पुरुष और प्रकृति के सहयोग से विश्व का विकास होता है। किन्तु यहाँ पर प्रश्न उठता है कि दोनों विरोधी हैं तो उनमें सहयोग कैसे सम्भव है? इसके उत्तर के लिए सांख्य अंधे और लंगड़े का उदाहरण देता है। इस उदाहरण में अंधा प्रकृति का का प्रतीक है क्योंकि प्रकृति अंधी है अर्थात अचेतन है और लंगड़ा

प्रकृति का क्योंकि पुरुष निष्क्रिय है। है लेकिन यही सही व्याख्या नहीं है। अन्धा और लंगड़े परस्पर विरोधी नहीं है क्योंकि दोनों चेतन है और दोनों का उद्देश्य एक है इसलिए उनका सहयोग आवश्यक है किन्तु प्रकृति और पुरुष का नहीं।

4. द्वैतवाद के विरुद्ध में सेलार्स का कहना है कि आधुनिक विकासवाद ने प्रमाणित कर दिया है कि चेतन कोई आदिम सत्ता नहीं है बल्कि विकासक्रम में उत्पन्न हुआ है। जीव के विकास क्रम में उत्पन्न हुआ है। जीव के विकास के पश्चात कुछ ऐसी स्थिति पैदा हुई कि चेतन का विकास हुआ। अतः जब चेतन की सत्ता मौलिक नहीं है तो उस हालत में द्वैतवाद का यह कहना कि चेतन और जड़ दोनों समानतः मौलिक और परमार्थ है, यथार्थ नहीं है

5. ज्ञान मीमांसा ने भी द्वैतवाद पर आक्षेप लगाया है। चेतन को जड़ से नितान्त भिन्न मानने पर ज्ञान असम्भव हो जाता है यह मानी हुई बात है कि जड़ पदार्थों का ज्ञान हमें होता है। ज्ञान में ज्ञाता और ज्ञेय के बीच सम्बन्ध स्थापित होता है।

It's no use going back to yesterday because I was a different person then.

लेकिन यहाँ पर ज्ञाता चेतन और जड़ और अंशिक है। अब चूंकि द्वैतवाद चेतन और जड को परस्पर विरोधी और स्वतंत्र मानता है इसलिए दोनों का सम्बन्ध सम्भव नहीं है। किन्तु सम्बन्ध के अभाव में चेतन द्वारा जड का ज्ञान असम्भव हो जायगा। इसलिए द्वैतवाद को मानने से ज्ञान असम्भव हो जाता है किन्तु ज्ञान होता है यह एक वास्तविक घटना है। इसलिए द्वैतवाद को सत्य नहीं माना जा सकता।

उपर्युक्त आलोचना के आधार पर यह सिद्ध होता है कि द्वैतवाद दुर्बल सिद्धान्त है। इसकी दुर्बलता दार्शनिकों ने महसूस की है। और यही कारण है कि इसके समर्थक की संख्या बहुत कम है।